विद्या- भवन ,बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

नीतू कुमारी, वर्ग-पंचम, विषय- हिंदी

दिनांक-20-09-2021 एन.सी.ईआर.टी पर आधारित

पाठ-13 जोजी रिजल

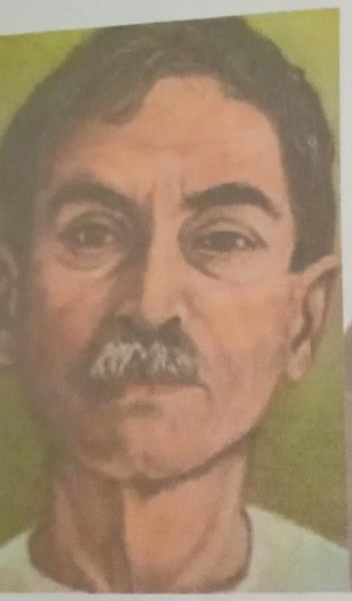

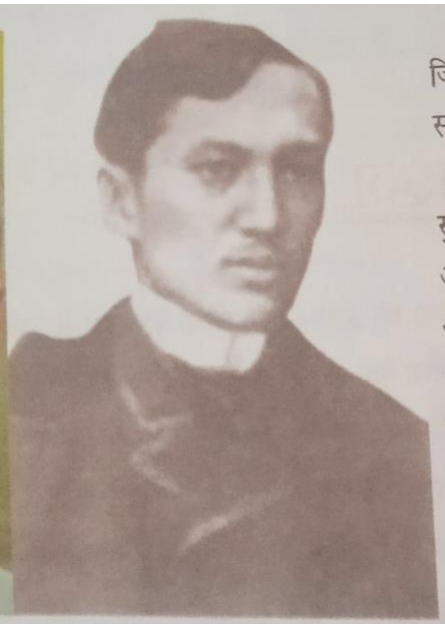

'जोजी रिजल' उन आदमियों में थ
जिनके जीवन की सबसे बड़ी हार उनक
सबसे बड़ी जीत होती है।

एशिया में फिलिपाइन-द्वीपसमूह तो तुमने
सुना ही होगा। पहले यह द्वीप स्पेन वालों के
अधिकार में था। अब उस पर संयुक्त
अमरीका का राज्य है। वहां के लोग अपना
असली धर्म, असली भाषा, सब त्याग करके
स्पेन का धर्म मानते हैं और स्पेन की भाषा
बोलने तथा लिखते हैं। धर्म, भाषा,
रहन-सहन, सब-कुछ बदल डालेन पर भी
स्पेन ने उन लोगों को स्वराज्य नहीं दिया।
वहां के लोग स्वराज्य के लिए आंदोलन कर
थे और स्पेन सरकार कभी वादे करके कभी आपस में फूट डालकर और कभी कठोर नीति से उन लोगों को कुचलती रहती थी।
त में वहां एक 'गाधी' का अवतार हुआ। उसी 'गांधी' का नाम 'जोजी रिजल' था।

जोजी रिजल अपने देश की दुर्दशा पर बराबर आंसू बहाता रहता था। विदेशियों के हाथों अपने भाइयों की हत्या, बहना का
पमान और नीति का खून होते देखकर उसे असीम दुख होता था। उसने सुधार के लिए युवकों की संस्थाएं बनाईं, समाचार-पत्र
काले और व्याख्यानों द्वारा जनता को जगाने लगा। गांधी ही की भांति वह भी प्रजा को शांत रहने के लिए कहा करता था।

स्पेन-सरकार को उसके ये प्रयत्न भयंकर मालूम हुए। उन्होंने उसको पकड़कर कैद कर देना चाहा। उसको यह खबर मिल
। वह चुपके से भाग निकला और फ्रांस पहुंचकर कानून पढ़ने लगा। उसकी बुद्धि इतनी तीव्र थी कि उसने 2-3 सालों में ही
ज्ञान दर्शन चिकित्सा आदि कई शास्त्रों की सनद हासिल कर ली।

फ्रांस ही में उसने एक उपन्यास लिखा। इसमें उसने उस अन्याय का चित्र खींचा, जो स्पेन वाले उसके देश पर कह रहे थे
तक एक सच्ची घटना के आधार पर लिखी गई थी। पुस्तक की भाषा, शैली और चित्रण इतने सजीव थे कि फिलिपाइन में घर-घ
सकी चर्चा होने लगी। स्पेन-सरकार ने तुरंत ही पुस्तक का फिलिपाइन में आना बंद कर दिया। मगर लोग उस पुस्तक के लिए इ
सुक हो रहे थे कि चोरी से कपड़े की गांठों में वह लाई जाती थी। लोग छिप-छिपकर उसे पढ़ते थे और रोते थे।

इस उपन्यास के प्रचार से 'जोजी' का दिल और बढ़ा। उसने एक दूसरा उपन्यास लिखा, जो पहले से भी सुंदर था। व

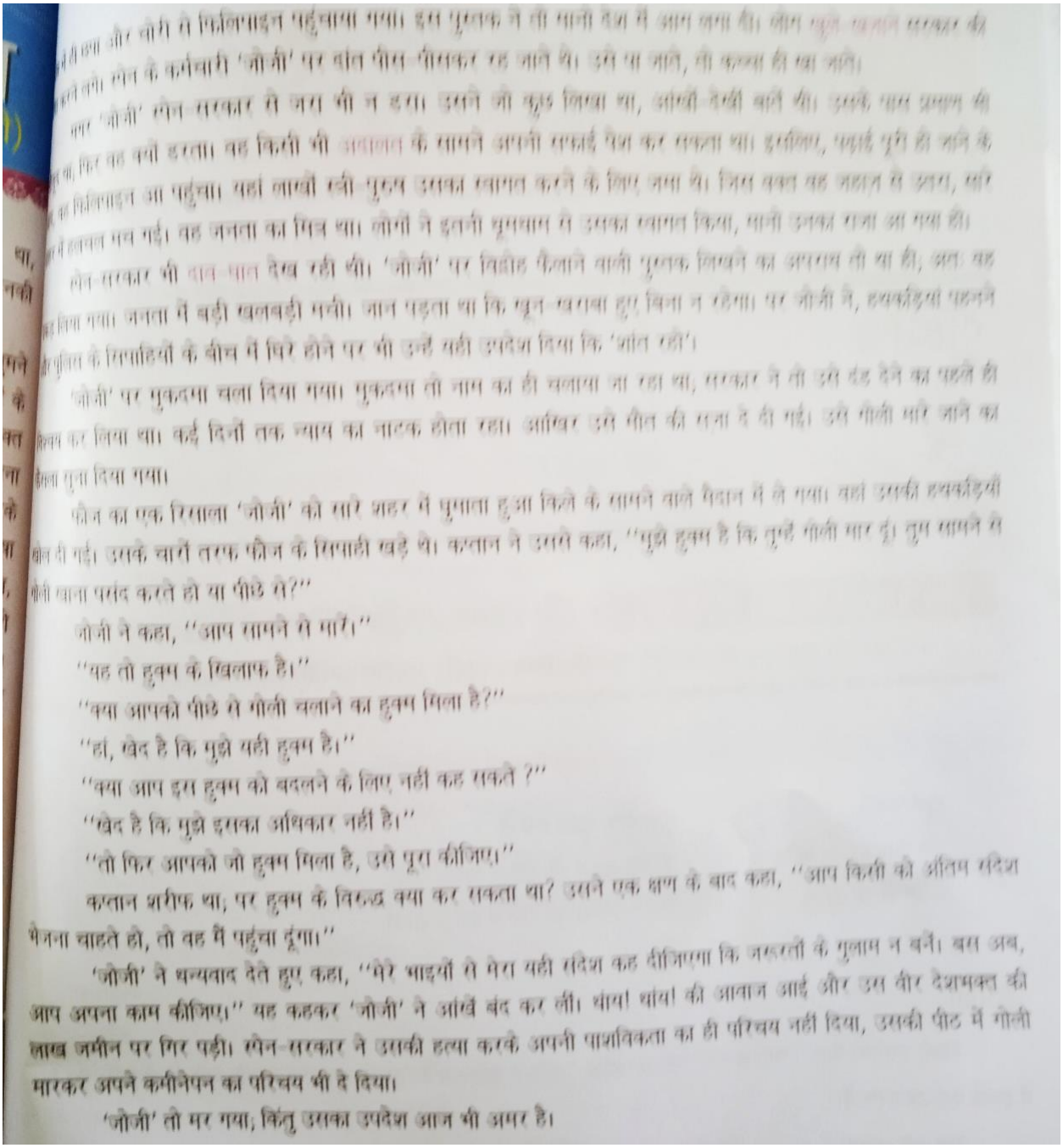

गृहकार्य-

दिए, गए अध्ययन -सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करें।